Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-III MARCH 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

'जूठन' आत्मकथा में दलित जीवनका यथार्थ

प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड
अध्यक्षा, हिंदी विभाग,
वसुंधरा कला महाविद्यालय,जुले सोलापुर, महाराष्ट्र।

प्रस्तावना :

हिन्दी साहित्य में दलित आत्मकथाका विशिष्ट स्थान है। दलित आत्मकथा का सृजन सर्व प्रथम मराठी भाषा में हुआ है। महामानव भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के 'मी कसा झालो' इस आत्मकथा से प्रेरित होकर महाराष्ट्र के दलित साहित्यकारों ने अपने जीवन का भोगा हुआ यथार्थ दलित आत्मकथाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।मराठीदलित साहित्यकारों से प्रभावित होकर हिन्दी के दलित साहित्यकारों ने भी दलित आत्मकथा लेखन का प्रारंभ किया है। हिन्दी दलित आत्मकथाओं में मोहनदास नैमिशराय की अपने–अपने पिंजरे (भाग–1 और भाग–2), ओमप्रकाश वाल्मीकि की जूठन (भाग–1 और भाग–2), सूरजपाल चौहान की तिरस्कृत और संतप्त, माता प्रसाद की झोपडी से राजभवन तक, कौसल्या बैसंत्री की दोहरा अभिशाप, श्यौराजसिंह बेचैन की मेरा बचपन मेरे कंधोंपर, रूपनारायण सोनकर की नागफनी, डॉ. धर्मवीर की मेरी पत्नी और भेडिया, डॉ. डी. आर. जाटव की मेरा सफर मेरी मंजिल, माता प्रसाद की झोपडी से राजभवन तक, प्रो. तुलसीराम की मुर्दहिया, प्रो. सुशीला टाकभौरे की शिकंजे का दर्द आदि प्रमुख दलित आत्मकथाएँ हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन' आत्मकथा हिंदी की प्रमुख दलित आत्मकथा है। 'जूठन' का प्रथम भाग 1997 में प्रकाशित हुआ है। इसमें दलित लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि और मेहतर समाज का भोगा हुआ यथार्थ जीवन अभिव्यक्त हुआ है।दलित साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर ओम प्रकाश वाल्मीकि का जन्म 1950 ई.स. में उत्तर प्रदेश के मुजफ्फर नगर के बरला नामक गाँव में हुआ है। उनकी शिक्षा एम.ए. (हिंदी साहित्य) हुई है। वे डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों को आदर्श मानते थे। वे महाराष्ट्र के दलित आंदोलन और दलित पँथर से प्रभावित थे। उन्होंने महाराष्ट्र के मराठी दलित साहित्य से प्रेरित होकर हिन्दी में दलित साहित्य सृजन किया है। उनके सदियों का संताप, बस्स बहुत हो चुका, अब और नहीं आदि कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं। सलाम, घुसपैठिए, सफाई देवता आदि कहानी संग्रह प्रमुख हैं। दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, मुख्यधारा और दलित साहित्य, दलित साहित्यः अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ आदि आलोचना संग्रह उल्लेखनीय हैं। जूठन (दोखंड) आत्मकथा के अंग्रेजी, जर्मन, स्वीडिश, पंजाबी, तमिल, मलयालम, कन्नड और तेलगु आदि अनेक भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। मराठी, अंग्रेजी की अनेक रचनाओं का अनुवाद किया है। वाल्मीकि जी ने लगभग 60 नाटकों में अभिनय एवं निर्देशन किया है। उन्हें डॉ- आंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार, परिवेश सम्मान, जयश्री सम्मान, कथाक्रम सम्मान, न्यू इंडिया बुक पुरस्कार, आठवाँ विश्व हिन्दी संम्मेलन, न्यूयॉर्क अमेरिका सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ आदि अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। कैंसर की बीमारी के कारण 17 नवबंर, 2013 में उनकी मृत्यु हुई है।अपनी आत्मकथा लिखते समय वाल्मीकि जी को अपने अतीत में सहनी पड़ी अनेक यातनाएँ, उपेक्षा, प्रताड़नाएँ, कष्ट और मानसिक यंत्रनाएँ फिर से झेलनी पड़ी है।

ओमप्रकाश वाल्कीकि की 'जूठन' आत्मकथा में लेखक के व्यक्तिगत जीवन के वास्तविक अनुभव चित्रित हुए हैं, जिसके माध्यम से दलित जीवन की यथार्थता प्रकट हुई है। प्रस्तुत आत्मकथा दलित समाज जीवन की अनेक यातनाएँ, प्रताड़नाएँ और उपेक्षित जीवन को उजागर करती है। हिन्दू समाज व्यवस्था में दलितों को हाशिए का जीवन जीना पड़ा है। उन्हें अछूत या अंत्यज कहकर समाज के बाहर रखा गया है। इसका परिचय प्रस्तुत आत्मकथा के प्रारंभ में ही होता है। आत्मकथा का प्रारंभ लेखक के बरला गाँव के डब्बोवाले जोहड़ी के वर्णन से हुआ है। वाल्मीकि जी के घर के पीछे गाँव का खुला शौचालय है। दलितों को गाँव से बाहर अत्यंत

गंदे परिवेश में रहना पड़ता है। उनके घर भी कच्ची–मिट्टी के और टूटे–फूटे हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि के शब्दों में ''चारों तरफ गंदगी भरी होती थी। ऐसी दुर्गंध कि मिनट भर में साँस घूट जाए। तंग गलियों में घूमते सूअर, नंग–धडंग बच्चे, कुत्ते, रोजमर्रा के झगड़े–बस यह था वातावरण जिसमें बचपन बीता। इस माहौल में यदि वर्ण–व्यवस्था को आदर्श व्यवस्था कहनेवालों को दो–चार दिन रहना पड़ जाए तो उनकी राय बदल जाएगी।''[1] गाँव के लोग दलितों को उनके नाम से नहीं बल्कि जाति के नाम से पहचानते हैं। सवर्ण लोग ओमप्रकाश वाल्मीकि के परिवार और उनकी जाति के लोगों को 'ओ चूहडे', 'अबे चूहडै' कहकर पुकारते हैं। गाँव के सवर्ण जाति के लोग 'तगा' या 'त्यागी' कहलाते हैं। सवर्ण 'तगा' या 'त्यागी' दलितों का शोषण करते हैं।

भारतीय समाज व्यवस्था में दलितों को शिक्षा के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ा है। ओमप्रकाश वाल्मीकि भी इसी संघर्ष से गुजरे हैं। वाल्मीकि जी के माता–पिता बेटे ओमप्रकाश को पढ़ा–लिखाकर एक बड़ा आदमी बनाना चाहते हैं। ओमप्रकाश शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्कूल जाते हैं। लेकिन स्कूल में उन्हें जाति–भेद का शिकार होना पड़ता है। स्कूल के सवर्ण अध्यापक, छात्र उन्हें जाति के कारण अपमानित करते रहते हैं। उन्हें हर समय 'चूहडा' कहकर बेइज्जत करने का प्रयास करते है।दलित होने के कारण स्कूल में उनके साथ होनेवाले अमानवीय व्यवहार के बारे में बताते हुएलेखक कहते हैं,''एक अजीब सी यातनापूर्ण जिंदगी थी, जिसने मुझे अंतर्मुखी और चिड़चिड़ा के तुनकमिजाजी बना दिया था। स्कूल में प्यास लगे तो हैंड पंप के पास खडे रहकर किसी के आने का इंतजार करना पड़ता था। हैंडपंप को छूने पर बवेला हो जाता था। लड़के तो पीटते ही थे। मास्टर लोग भी हैंडपंप को छूने पर सजा देते थे। तरह–तरह के हथकंडे अपनाए जाते थे ताकि मैं स्कूल छोड़कर भाग जाऊँ और मैं भी उन्हीं कामों में लग जाऊँ जिनके लिए मेरा जन्म हुआ था। उनके अनुसार स्कूल आना मेरी अनधिकार चेष्टा थी।''[2]

आत्मकथाकार ने यह दर्शाया है कि स्कूल के हेडमास्टर कलिराम छात्र ओमप्रकाश को उनकी दलित जाति के कारण तिरस्कृत और अपमानित करते हैं। हेडमास्टर नहीं चाहते हैं कि ओमप्रकाश कक्षा में बैठकर सवर्ण छात्रों की तरह अध्ययन करें, पढ़–लिखकर अपने परंपरागत व्यवसाय से मुक्त हो। स्कूल के हेडमास्टर कलिराम ओमप्रकाश को गालियाँ देते हुए कहते हैं, ''अबे चूहडे के, मादरचोद, कहाँ घुस गया.... अपनी माँ.....''[3] यह कहकर हेडमास्टर ड़रे हुए छात्र ओमप्रकाश को कक्षा में बैठकर पढ़ने की बजाय स्कूल का सारा मैदान साफ करने के लिए कहते हैं। लेखक इस प्रसंग का वर्णन करते हुए बताते हैं, ''हेडमास्टर ने मेरी गर्दन दबोच ली थी। उनकी उँगलियों का दबाव मेरी गर्दन पर बढ़ रहा था। जैसे कोई भेड़िया बकरी के बच्चे को उठा लेता है। कक्षा के बाहर खींचकर उसने मुझे बरामदे में ला पटका। चीखकर बोले, ''जा लगा पूरे मैदान में झाड़ू... नहीं तो गांड़ में मिर्ची डालके बाहर काढ़ निकाल दूँगा।''[4]हेडमास्टर ओमप्रकाश जी से तीन दिन तक स्कूल के लंबे–चौडे मैदान में झाड़ू मारने का काम करवाते हैं। उन्हें कक्षा में बैठकर पढ़ने से रोकते हैं। इस तरह दलित छात्रों के साथ स्कूल में अत्यंत क्रूर बरताव होता है। सवर्ण हेडमास्टर और अध्यापक छात्रों को मार–पीटकर, अपमानित कर शिक्षा से वंचित रखने का प्रयास करते हैं।ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के पिताजी स्कूल के रास्ते से गुजरते समय अपने बेटे को स्कूल के मैदान में झाड़ू लगाते हुए देखते हैं। बेटे से सारी हकीकत जानने के बाद वे अत्यंत क्रोधित होकर अपने बेटे को झाड़ू लगानेवाले सवर्ण अध्यापक को ललकारते हुए कहते हैं, ''कौन–सा द्रोणाचार्य की औलाद, जो मेरे लड़के से झाड़ू लगवावे हैं....।''[5] वे अध्यापक को धमकी देते हुए कहते हैं कि, ''मास्टर हो.... इसलिए जा रहा हूँ.... पर इतना याद रखिए मास्टर.... यो चूहडे का यहीं पढ़ेगा.... इसी मदरसे में। और यो ही नहीं, इसके बाद और भी आवेंगे पढ़ने कूं।''[6] पिता के विद्रोह के बाद ओमप्रकाश जी स्कूल में कक्षा में बैठकर पढ़ने लगते हैं। कक्षा में भी सवर्ण अध्यापक दलित छात्रों के साथ जातिगत भेदभाव करते हैं।

स्कूल में ओमप्रकाश की तरह अन्य दलित छात्रों के साथ भी जातीय घृणा का व्यवहार होता है। चमार, झीवर, मेहतर आदि दलित जातियों के छोत्रों को सवर्ण अध्यापकों की अनेक शारीरिक और मानसिक यातनाएँ सहनी पड़ती हैं। ओमप्रकाश जी के मामा के लड़के सुरजन सिंह को सवर्ण अध्यापक हरफूल सिंह बेरहमी से पीटते हैं क्योंकि वह दलित है। इस घटना का वर्णन करते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि लिखते हैं, ''सुरजन सिंह

को बेरहमी से पीट रहे थे–लगता था कोई जालिम गुंडा किसी निर्दोष को पीट रहा है। सुरजन सिंह जमीन पर गिर पड़े थे नहीं कि एक अध्यापक अपने छात्र को सजा दे रहा है। वे लगातार घूँसे और लात चला रहे थे।''[7]इस घटना को ओमप्रकाश वाल्मीकि कभी भूले नहीं। इस अमानवीय हादसे की दहशत उनके मन पर हमेशा छायी रहती है। ''शिक्षक की मानसिकता तैयार करनेवाला पुरातनवादी पाठ्यक्रम असंबध्द, अलोकतांत्रिक और अवैज्ञानिक विचारों पर टिका शैक्षिक वातावरण भी जिम्मेदार है। शिक्षक लोकतांत्रिक एजूकेशन कोड का पालन करने के बजाय अपने पुरातन सामंती संस्कारों से संचालित होते रहते हैं। ज्ञान के इन स्वयंभू ठेकेदारों को दर्पण दिखाकर वाल्मीकि ने सराहनीय काम किया है।''[8]

लेखक यह स्पष्ट करते हैंकि उच्च जाति के लोग दलितों से बेगार करवाते हैं। स्कूल में पढ़ रहे छात्रों को भी जबरन बेगार करवाते हैं। छात्रावस्था में ओमप्रकाश जी के बोर्ड की परीक्षा के समय फौजी सिंह त्यागी ओमप्रकाश से अपने खेत में ईख बोने का काम करवाते हैं। ओमप्रकाश जी को अध्ययन करने की बजाय फौजी सिंह की खेती में जबरदस्ती काम करना पड़ता है। लेखक अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण यह अन्याय सहते हैं।

प्रस्तुत आत्मकथा में दलितों की उपेक्षा और अपमान करनेवाली प्रथा–परंपराओं के खिलाफ दलित समाज द्वारा विद्रोह की घटनाओं का भी जिवंत चित्रण हुआ है। ''वाल्मीकि जी की 'जूठन' आत्मकथा में ऐसे अनेकों प्रसंग एवं घटनाएँ मिलती हैं जो ब्राह्मणवादी पोषकों के जातिवादी चरित्रों, रीति–रिवाजों, परंपराओं तथा प्रथाओं के खिलाफ बगावत का संकेत देती है।''[10] आत्मकथा में सवर्णों के परिवारों में शादी–ब्याह के समय कई दिनों तक दलितों को साफ–सफाई के काम करने पड़ते हैं। आत्मकथा में अभिव्यक्त सुखदेव सिंह त्यागी की बेटी के विवाह के पहले दस–बारह दिन वाल्मीकि जी की माँ और पिताजी साफ–सफाई का काम करते हैं। इतने दिनों की सफाई के बदले उन्हें बारात की जूठन ही नसीब होती थी। गरीबी के कारण दलितों को सवर्णों के घर की जूठन खानी पड़ती थी। लेखक कहते हैं, ''दिन–भर खपकर भी हमारे पसीने की कीमत मात्र 'जूठन', फिर भी किसी को कोई शिकायत नहीं, कोई शर्मिंदगी नहीं, कोई पश्चाताप नहीं।''[11] सुखदेव सिंह त्यागी की बेटे के विवाह के दिन लेखक की माँ बारात में बची–खुची जूठन एक टोकरे में इकट्ठा करती है। वह सुखदेव सिंह त्यागी को अपने बच्चों के लिए पत्तल में खाना माँगती है। तब सुखदेव सिंह त्यागी लेखक की माँ का अपमान करते हुए कहता है, ''टोकरा भर तो जूठन ले जा रही है.... उपर से जाकतों के लिए खाणा माँग री है? अपणी औकात में रह चूहड़ी। उठा टोकरा दरवाजे से और चलती बन।''[12] लेखक की स्वाभिमानी माँ उसी समय टोकरे में जमा की हुई सारी जूठन वहीं बिखेर देती हैसुखदेव सिंह त्यागी को करारा उत्तर देते हुए कहती है, ''इसे ठाके अपने घर धर ले। कल तड़के बरातियों को नाश्ते में खिला देणा।...''[13]इस घटना के बाद वाल्मीकि जी के परिवार में 'जूठन' की प्रथा बंद होती है। वाल्मीकि जी की माँ के आत्म सम्मानी स्वभाव के कारण सदियों से चली आरही यह सड़ी–गली प्रथा बंद होती है।

आत्मकथा में 'जूठन' की तरह 'सलाम' प्रथा का वर्णन हुआ है। 'सलाम' की प्रथा अनुसार दलित परिवार में विवाह के दिन दूल्हा और दूल्हन को सवर्ण परिवारों में जाकर सलाम करना पड़ता था। जिन–जिन सवर्ण परिवारों के घरों में उस दलित परिवार के लोग काम करते थे। उन सबके घरों में दूल्हा और दुल्हन ससुराल में अपनी सास के साथ सलामी देनेजानापड़ता था। इसके बदलेहर दूल्हे और दूल्हन को कुछ कपड़े और बर्तन मिलते थे। वाल्मीकि जी के परिवार में उनके बड़े भाई जनेसर और बहन माया के विवाह के समय उनके पिताजी और परिवार 'सलाम' प्रथा को तोड़ते हैं। वे सदियों से चली आ रही दलितों के अपमानित जीवन की इस कुप्रथा को नष्ट करते हैं। लेखक के परिवार के बाद पूरा गाँव यह 'सलाम' की प्रथा तोड़ देता है।

प्रस्तुत आत्मकथा में वाल्मीकि जी जातिय भेदभाव की दूरी बताते हुए कहते हैं कि अंबपुर में नौकरी करते समय ब्राह्मण जाति की सविता उनसे प्रेम करती है। लेकिन बाद में उनकी दलित जाति के कारण उन्हें नकारती है। इसे आत्मकथाकार अत्यंत संवेदनशील वास्तविकता के साथ चित्रित करते हैं। वाल्मीकि जी सरनेम

के कारण उन्हें मिले जातीय दंश की भी चर्चा करते हैं। वे पत्नी और मित्रों के कहने पर भी अपना सरनेम बदलते नहीं है। उन्हें अपना सरनेम बहुत प्रिय है। भले ही उन्हें उनके सरनेम के कारण कटू अनुभव आए हो।

आलोच्य आत्मकथा में वाल्मीकि जी डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों से प्रेरित होकर शिक्षा प्राप्त करते हैं। डॉ. बाबासाहब के 'शिक्षित हो, संघठित हो और संघर्ष करो' के त्रिसूत्र के अनुसार अपना व्यक्तित्व बनाते हैं। वे महात्मा गौतम बुध्द के मानवता, करूणता और प्रज्ञा जैसे तत्वों से प्रभावित होकर जीवन संघर्ष करते हैं।आत्मकथा में महाराष्ट्र का दलित आंदोलन और दलित चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति हुई है।

निष्कर्ष :

'जूठन' आत्मकथा में आत्मकथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी स्वानुभूति व्यक्त करते हुए दलित समाज की यथार्थ स्थिति को उजागर किया है। प्रस्तुत आत्मकथा में केवल ओमप्रकाश वाल्मीकि का नीजी जीवन नहीं हुआ है बल्कि दलित समाज के भोगे हुए यथार्थ जीवन अनुभव व्यक्त हुए हैं। दलित जीवन की वेदना, पीड़ा और आक्रोश की तीव्र अभिव्यक्ति हुई है।भारतीय समाज व्यवस्था में व्याप्त जातियता, धर्मांधता, रूढ़ी, प्रथा–परंपरा आदि के कारण दलितों को अनेक कष्ट और यातनाएँ सहनी पड़ती हैं। इसे वाल्मीकि जी ने विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से उजागर किया है।आत्मकथा में भारतीय वर्णव्यवस्था में प्रचलित प्रथा–परंपराओं के खिलाफ विद्रोह व्यक्त हुआ है। प्रस्तुत आत्मकथा में वाल्मीकि जी डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों का अनुकरण कर 'शिक्षित हो, संघटित हो और संघर्ष करो' इस सूत्र के अनुसार दलित समाज को अपना विकास करने की आवश्यकता बतायी है। आत्मकथा में सामाजिक उन्नति के लिए जातिय भेदभाव और संकिर्ण विचारों को त्यागने की आवश्यकता व्यक्त हुई है। इसमें सामाजिक समानता, न्याय, बंधुता का संदेश अभिव्यक्त हुआ है। भारतीय समाज व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए वैचारिक और मानसिक परिवर्तन की आवश्यकता व्यक्त हुई है। संपूर्ण समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए मानवता को अपनाने की भावना दिखायी देती है।

संदर्भ संकेत :

1. जूठन – ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ. 11
2. वही पृ. 13
3. वही पृ. 15
4. वही।
5. वही पृ. 16
6. वही।
7. वही पृ. 62
8. वही, पृ. 46
9. अपेक्षा पत्रिका – संपा. तेजसिंह, पृ. 38, अंक–जनवरी–जून 2014
10. दलित विमर्श – धीरजभाई वणकर, पृ. 48
11. जूठन – ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ. 20
12. वही, पृ. 21
13. वही।